**समै की सुराही**

समै की सुराही देती है गवाही

बढ़ते आगे वही जो सह पाते है जुदाई

मुस्कराहट होती है जिनकी लालसा और सदा होती है समाई

लड़खड़ाते नहीं जो चाहे कितनी भी हो पीड़ा या फिर कठिनाई

मौसम की हर रुत जिन्हें लगती है लुगाई

आसमान में जिन्हें दिखाई देती है मंजिल और उसकी पर्चाही

ये वो सिकंदर है जो खेल जाते है अगर जान पे भी इनके आई

क्यूंकि उन्होंने देखा होता है समै और समाई की सुराही

मंजिल की आस तो सभी करते है मगर सबको नहीं देती ये दिखाई

सोचने के तो दाम लगते नहीं इसलिए सभी देखते है इसमें मधुरता और मधुराई

चलना होता है जब इसे पाने की राह पे तो समझ आती है सारी पीड़ा और कठिनाई

लगता तब ऐसे जैसे अनंत परमेश्वर ने हमपर बिजली की कोई गाज गिराई

मचल जाता है मन जब लेते है हम खिलती सुबह में अंगड़ाई

मुश्किल हो जाता है वक़्त तपती धुप में क्यूंकि नहीं पड़ता कुछ दिखाई

आँखों में छा जाती है नमी रहती है तो सिर्फ छाव की प्यास

मंजिल ऐसे ही नहीं मिलती दोस्तों चाहे पलटकर देख लो रचे हुए इतिहास

किशोर पाठक